सिनेकथा
सिनेमाघरों, फिल्मों
और कलाकारों
के कुछ किस्से
अवशेष चौहान

सिनेकथा: सिनेमाघरों, फिल्मों और कलाकारों के कुछ किस्से

अवशेष चौहान

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2024

© अवशेष चौहान

समर्पित

आदरणीय अजय ब्रह्मात्मज सर, मनीषा कुलश्रेष्ठ मैम और डॉ. शिवजी श्रीवास्तव सर के नाम जिनके स्नेह के बग़ैर इस किताब का अस्तित्व में आना मुमकिन नहीं था।

अनुक्रम

ख्यात कथाशिल्पी कमलेश्वर, शहर मैनपुरी और क्लासिक फ़िल्म ‘बदनाम बस्ती’ 9

डिलाइट : दरियागंज स्थित राजधानी का प्रतिष्ठित सिनेमाघर 18

कहानियों का कायाकल्प : साल 2023 में साहित्यिक कृतियों पर आधारित फ़िल्में और वेब सीरीज़ 23

कनॉट प्लेस के चार सिनेमाघर 34

कार्तिकी गोंसाल्वेस : ऑस्कर अवार्ड से सम्मानित डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म ‘द एलीफ़ेंट व्हिस्परर्स’ की निर्देशक 41

शीला सिनेमा: दिल्ली का वो ऐतिहासिक सिनेमाघर जिसमें सबसे पहले 70 एमएम का पर्दा लगा था 48

2023 के छह कलाकार 51

मोती सिनेमाघर: दिल्ली का वो ऐतिहासिक सिनेमाघर जो किस्सों में रह गया हैं 60

अजय देवगन: प्रेमियों के दिलों पर राज करने वाला एक अजेय अभिनेता 65

कृष्णा टॉकीज़: मैनपुरी का गौरव 72

साहित्यिक कृतियों पर बनी अपराध कथाएं 76

भूमिका

अवशेष मेरे अत्यंत आत्मीय एवं प्रिय हैं। हमारे रिश्तों के केंद्र में है मैनपुरी। मैनपुरी मेरी कर्मभूमि है और अवशेष की जन्मभूमि, लेखन हम दोनों का धर्म है इस नाते मुलाकातें होना स्वाभाविक है। हर मुलाकात में मैंने उन्हें अत्यंत सहज, विनम्र और लेखन के प्रति समर्पित पाया जिससे वे शीघ्र ही मेरे आत्मीय एवं प्रिय हो गए। शुरुआत में मैंने उन्हें कहानीकार के रूप में जाना पर धीरे-धीरे ज्ञात हुआ कि वे संस्मरण और फिल्मी-लेखन में भी सक्रिय हैं और हर विधा में अच्छा रच रहे हैं, फिल्मों के संबंध में उनके आलेख प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं। उनकी यह पुस्तक -'सिनेकथा: सिनेमाघरों, फिल्मों और कलाकारों के कुछ किस्से' उनके अब तक प्रकाशित फिल्म-विषयक ग्यारह लेखों को लेकर सामने आ रही है।

यूँ तो फिल्मी-लेखन के क्षेत्र में अनेक रचनाकार/ पत्रकार सक्रिय हैं, पर अवशेष की अपनी अलग शैली है। वे पेशेवर लेखक नहीं हैं, उन्हें जो रुचिकर लगता है या आम भाषा में कहें कि जो उनके दिल को भाता है वही लिखते हैं। अवशेष घुमक्कड़ी प्रकृति के हैं, उनकी ये प्रकृति उन्हें लेखन के लिए नए-नए विषय देती रहती है। वे सदा नवीन एवं अछूते विषयों की तलाश में रहते हैं, नए विषयों को ढूंढकर और उस पर शोधपरक ढंग से पर्याप्त सामग्री जुटाकर ही वे अपने आलेख लिखते हैं इसीलिए वे जो लिखते हैं वह तथ्यपरक और प्रामाणिक होता है। जहाँ आवश्यक होता है वे ऐतिहासिक तथ्यों के साथ

अपनी बात रखते हैं। फिल्मी-लेखन में प्रायः फिल्मी सितारों के जीवन के सच्चे-झूठे किस्से या फिल्म समीक्षाएँ ही देखने को मिलते हैं पर अवशेष इनसे कुछ अलग हटकर, कुछ अनूठा लिख रहे हैं, इस पुस्तक में संकलित आलेखों के विषयों का चयन, उनके शीर्षक, भाषा और प्रस्तुति-शैली सब उनके इस अनूठेपन की गवाही दे रहे हैं।

'सिनेकथा: सिनेमाघरों, फिल्मों और कलाकारों के कुछ किस्से' पुस्तक में अपने नाम के ही अनुरूप तीन विषयों पर केंद्रित आलेख हैं- ये विषय हैं चर्चित फिल्में, फिल्मी कलाकार और सिनेमाघर। संकलन के तीन आलेखों में समकालीन आठ चर्चित कलाकारों की कलात्मक विशेषताओं का सम्यक मूल्यांकन किया गया है। इनमें एक-एक आलेख क्रमशः अजय देवगन और 'द एलीफेंट व्हिसपर्स' की निर्देशक कार्तिकी गोंसाल्विस पर केंद्रित है, तथा एक आलेख एक साथ उन छह कलाकारों पर केंद्रित है जिन्होंने वर्ष 2023 में अपनी कला का डंका बजाया वे कलाकार हैं- वामिका गब्बी, बाविल खान, विक्रांत मैसी, त्रिनेत्र हलदार गुम्माराजू, गगन देव रियार और तृप्ति डिमरी एक साथ छह कलाकारों पर केंद्रित आलेख का शीर्षक ही उन्होंने दिया है- 'बीते साल में उभरकर आए वे छह कलाकार जिन्होंने अपनी कला का डंका बजा दिया है।'

प्रायः ये कहा जाता है कि अब फिल्मकार साहित्यिक कृतियों पर फिल्म नहीं बनाते, इसके उत्तर में भी पुस्तक में एक आलेख है- 'कहानियों का कायाकल्प; साल 2023 में साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में और वेब सीरीज' जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है इसमें सन 2023 में देश और विदेश की कृतियों पर आधारित बनी सफल फिल्मों और वेब सीरीज का उल्लेख करते हुए अवशेष ने ये बतलाने का प्रयास किया है

कि अच्छी एवं चर्चित कृतियों पर फ़िल्में बन भी रही हैं और सफलतापूर्वक चल भी रही हैं।

एक और विषय जिसे प्रायः लोग नहीं उठाते हैं वह है वर्तमान दौर में ऐतिहासिक सिनेमाघरों की स्थिति। दरअसल तेजी से बदलती तकनीक ने फिल्मों के स्वरूप को तो बदला ही, सिनेमाघरों के रूप में भी क्रांतिकारी परिवर्तन किया। परिवर्तन के दौर में सिनेमाघरों में परंपरागत छोटे पर्दों कि जगह पहले 70 एम. एम. के पर्दे प्रचलन में आए फिर मल्टीप्लेक्स का युग आया और अब ओटीटी के दौर में टीवी के स्क्रीन पर सिमटती फिल्मों के दौर ने पुराना बहुत कुछ बदल दिया, बहुत कुछ निरर्थक कर दिया, ये बदलाव इतनी तीव्र गति से हुआ कि परंपरागत सिनेमाघर उनके साथ नहीं दौड़ पाए परिणामतः अनेक सिनेमाघर तो बंद हो गए पर कुछ अपने में बदलाव लाते हुए स्वयं के अस्तित्व को बचाए रखने में सफल भी हो गए। अवशेष ने इस विषय को बड़े मार्मिक ढंग से छुआ है। उन्होंने पाँच आलेखों में ऐसे आठ सिनेमाघरों का चित्रण किया है जो बहुत पुराने हैं और आज भी अपने आप को बचाए हुए हैं। इनमें सात दिल्ली के सिनेमाघर हैं - रीगल, प्लाज़ा, ओडियन, रिवोली, मोती, शीला और डिलाइट तथा एक है मैनपुरी की कृष्णा टॉकीज। दिल्ली के सात सिनेमाघरों में चार तो कनॉटप्लेस में ही है- रीगल, प्लाज़ा, रिवोली और ओडियन इसलिए इनका वर्णन एक ही आलेख-'कनॉटप्लेस के चार सिनेमाघर' में किया है शेष तीनों के लिए अलग-अलग आलेख हैं। जिन लोगों ने भी इनमें या किसी भी पुराने सिनेमाघरों में फिल्में देखने का आनंद लिया है वे इन आलेखों को पढ़ते समय नॉस्टेलजिक होते हुए अपने को उन सिनेमाघरों में पाएँगे जहाँ कहीं उन्होंने